सिक्किल माला चन्द्रशेखर

अकादेमी पुरस्कारः
कर्नाटक वाद्य संगीत (बांसुरी)

SIKKIL MALA CHANDRASEKHAR

Akademi Award:
Carnatic Instrumental Music (Flute)

तमिलनाडु के कुंभकोणम में 23 अगस्त 1963 को जन्मी, श्रीमती सिक्किल माला चन्द्रशेखर ने सिक्किल वी. कुंजुमणि और सिक्किल एन. नीला जैसे गुरुओं से कर्नाटक शैली में बांसुरी वादन का प्रशिक्षण प्राप्त किया। बाद में आपने एम. एस. सुब्बुलक्ष्मी और राधा विश्वनाथन जैसे गुरुओं के सानिध्य में अपनी कला को निखारा। आपका सम्बंध सिक्किल परम्परा (तंजावुरबानी की पारम्परिक गायन शैली) से है।

आप आकाशवाणी और दूरदर्शन की 'शीर्ष' श्रेणी की कलाकार हैं और आईसीसीआर में भी पैनलबद्ध हैं। श्रीमती सिक्किल माला चन्द्रशेखर ने देश–विदेश में आयोजित होने वाले प्रतिष्ठित संगीत समारोहों में अपनी प्रस्तुतियाँ दी है। आपने भारत में और भारत के बाहर भी संगीत विषयक कई कार्यशालाओं और संगोष्ठियों का आयोजन किया है। आपने बहुत से छात्रों को संगीत का प्रशिक्षण भी दिया है।

श्रीमती सिक्किल माला चन्द्रशेखर देश की कई प्रतिष्ठित सांस्कृतिक संस्थाओं से जुड़ी रही हैं। आपके संगीत की कई रिकॉर्डिंग उपलब्ध हैं।

कर्नाटक वाद्य संगीत के क्षेत्र में योगदान के लिए, आपको देश–विदेश के कई प्रतिष्ठित सांस्कृतिक संस्थानों द्वारा उपाधियों और पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है, जिनमें संगीत अकादमी, चेन्नई द्वारा प्रदान किया गया बांसुरी मणि पुरस्कार (1993); तमिलनाडु ईयल इसई नाटक मनरम द्वारा प्रदान किया गया कलइमामणि (1995); भारत कलाचर, चेन्नई द्वारा प्रदान किया गया युवा कला भारती (1996); श्री शन्मुखानंद संगीत सभा, मुंबई द्वारा प्रदान किया गया शन्मुख संगीत शिरोमणि (2006); डॉ. बालमुरली कृष्णा द्वारा प्रदान किया गया मदुरा मुरली पुरस्कार (2012); पापनासम सिवन कर्नाटक संगीत सभा, मडिपक्कम द्वारा प्रदत्त पापनासम सिवन पुरस्कार (2016); और श्री श्यामा शास्त्री राष्ट्रीय संगीत समारोह, कांचीपुरम द्वारा प्रदान किया गया श्री श्यामा शास्त्री संगीत रत्न पुरस्कार (2016) महत्वपूर्ण है।

श्रीमती सिक्किल माला चन्द्रशेखर को कर्नाटक वाद्य संगीत (बांसुरी) में योगदान के लिए वर्ष 2019 के संगीत नाटक अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित किया जाता है।

Born on 23 August 1963 at Kumbakonam in Tamil Nadu, Shrimati Sikkil Mala Chandrasekhar received her training in playing the flute in the Carnatic style from Sikkil V. Kunjumani and Sikkil N. Neela, and later groomed her art under the tutelage of M.S. Subbulakshmi and Radha Viswanathan. She belongs to the Sikkil tradition (traditional vocal style of Thanjavur *Bani*).

A 'Top' grade artist of All India Radio and Doordarshan, and an empanelled artist of I.C.C.R., Shrimati Sikkil Mala has performed in many prestigious music festivals around the world. She has conducted many workshops and seminars on music in India and abroad and has trained many students. Shrimati Sikkil Mala has been associated with many prestigious cultural institutions in the country. She has many recordings to her credit.

For her contribution in the field of Carnatic instrumental music, she has been honoured with the Flute Mali Award conferred by the Music Academy, Chennai (1993); the Kalaimamani bestowed by the Tamil Nadu Eyal Isai Nataka Manram (1995); the Yuva Kala Bharathi by Bharat Kalachar, Chennai (1996); the Shanmukha Sangeetha Shiromani given by Shri Shanmukhananda Sangeetha Sabha, Mumbai (2006); the Madura Murali Puraskar given by Dr Balamurali Krishna (2012); the Papanasam Sivan Award conferred by the Papanasam Sivan Karnataka Sangeetha Sabha, Madipakkam (2016); and Sri Syama Sastri Sangeetha Rathna Award bestowed by Sri Syama Sastri National Music Festival, Kanchipuram (2016).

Shrimati Sikkil Mala Chandrasekhar receives the Sangeet Natak Akademi Award for the year 2019 for her contribution to Carnatic instrumental music.